भारत में जाति-राजनीति (Caste Politics in India)

भारत में जाति-राजनीति : महत्वपूर्ण तथ्य Caste-Politics in India : Important Facts

1. 2002 में राष्ट्रीय आयोग ने निर्वाचन में सुधार हेतु एक रिपोर्ट दी, जिसमें जाति आधारित चुनाव अभियान को रोकने की सिफारिश की गयी
2. 2007 में द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग की चौथी रिपोर्ट में, प्रशासन में जातिवाद को रोकने पर बल दिया गया
3. 2013 में Allahabad HC द्वारा राजनीतिक दलों को जातीय आधार पर रैली निकालने को रोकने का आदेश दिया गया

अंग्रेजी शासन काल में जाति-राजनीति संबंध Caste-Politics Relations during the British Rule

1. जस्टिस पार्टी – 1917 में रामासामी नायकर (पेरियार) द्वारा
2. द्रविड़ कझगम – 1944 में नायकर द्वारा अन्नादुरै के साथ
3. बिहार में 1937 में, यादव, कोइरी एवं कुर्मी द्वारा त्रिवेणी संघ का निर्माण

उत्तर भारत में जाति-राजनीति संबंध Caste-Politics Relations in North India

1. उत्तर भारत की सामाजिक संरचना
Social Structure of North India

(i) समाज अगड़ी एवं पिछड़ी जातियों (Forward & Backward Castes) में विभक्त

(ii) 1945-1970- उच्च जातियों का राजनीतिक सशक्तिकरण

(iii) 1970 के बाद मध्यवर्गीय जातियों (Middle Castes) का राजनीतिक सशक्तिकरण

(iv) 1980-1990 तक दलित जातियों (Dalit Castes) का राजनीतिक सशक्तिकरण

(v) 1990-2020 तक विखराव (Scarcity) का काल-

- अलग-अलग जातियों के अलग-अलग नेतृत्व;
- एक ही जाति में कई नेतृत्व;
- जाति-राजनीति में नवीन समीकरण (New Equation) का निर्माण और विकास (Development) के साथ जाति राजनीति संबंध

दक्षिण भारत में जाति राजनीतिक संबंध
Caste Political Relations in South India

1. दक्षिण भारत की सामाजिक संरचना
Social Structure of South India)

(i) समाज ब्राह्मण बनाम गैर-ब्राह्मण जातियों में विभक्त, जैसे-

- तमिलनाडु- ब्राह्मण बनाम थेवार, चेट्टियार, मुदिलियार, बेलाला, बेन्नियार एवं नाडार
- आंध्र प्रदेश- ब्राह्मण बनाम रेड्डी, कामा, बेलामा एवं नायडू
- कर्नाटक- ब्राह्मण बनाम वोक्कालिंगा (बहुसंख्यक-16%), लिंगायत (बहुसंख्यक-17%), गौड़ा एवं कुरूंबा
- महाराष्ट्र- ब्राह्मण (4%) बनाम मराठा (25%), कुनबी (माली एवं तेली के साथ 50%), महार (11%)

(ii) 1947-1970- ब्राह्मणों के साथ-साथ मध्यवर्गीय जातियों का राजनीतिक सशक्तिकरण

(iii) 1970 के बाद- दलितों का राजनीतिक सशक्तिकरण

(iv) 1980-1990- विखराव का काल

(v) 1990-2020- नवीन समीकरण और विकास के साथ जाति राजनीति संबंध विद्यमान

जाति-राजनीति संबंध - राजनीति में जाति
Caste-Politics Relations - Caste in Politics

अर्थात् राजनीतिक दलों द्वारा सत्ता (Power) प्राप्ति हेतु राजनीति में जाति का प्रयोग

- विशिष्ट जाति (Particular Caste) के आधार पर राजनीतिक दलों (Political Parties) का निर्माण
- विशिष्ट जातियों को, उनके हितों को पूरा करने का वायदा
- जातीय आधार पर टिकट का बंटवारा

- चुनाव जीतने हेतु जातीय समीकरण का निर्माण [भाजपा, कांग्रेस, राजद, सपा, जनता दल आदि]
- सरकार में जातीय आधार पर मंत्रियों को प्रतिनिधित्व
- राजनीति में जातिवाद (Casteism in Politics) अर्थात् सरकार द्वारा विशिष्ट जातियों को सरकारी लाभ प्रदान करना

जाति-राजनीति संबंध - जाति में राजनीति

Caste-Politics Relations - Politics in Caste

अर्थात् जनता द्वारा सामाजिक-आर्थिक हितों की पूर्ति हेतु राजनीति में जाति का प्रयोग

⬇

- आर्थिक एवं राजनीति शक्ति (Economic and Political Power) प्राप्त करने हेतु दबाव समूह (Pressure Group) के रूप में जाति संगठनों (Caste Associations) का निर्माण
  (जाट महासभा, गुर्जर महापंचायत आदि)

- राजनीतिक एवं आर्थिक शक्ति (Political and Economic Power) प्राप्त करने हेतु जातीय संघों (Caste Federations) का निर्माण
  (अखिल भारतीय वैश्य महासभा, अखिल भारतीय यादव महासभा आदि)
- जनता द्वारा जातीय आधार पर राजनीति में सहभागिता (Political Participation)

जाति-राजनीति संबंध के हानि / नकारात्मक पक्ष / विपक्ष में तर्क

Disadvantages of Caste-Politics Relation

1. राजनीति में तथा समाज में, जातीय निष्ठा (Caste Loyalty) को विकसित करके जातिवाद को बढ़ावा और आधुनिक समाज (Modern Society) का निर्माण बाधित
2. राजनीति में जातिवाद (Casteism in Politics) से विकास की प्रक्रिया बाधित
3. विभिन्न जातियों के मध्य नकारात्मक प्रतिस्पर्द्धा से जातीय-संघर्ष एवं तनाव (Caste Conflict and Tension) में वृद्धि, फलतः सामुदायिक सौहार्द्रता (Community Harmony) कमजोर

4. बहुसंख्यक एवं प्रभु जातियों (Majority and Dominant Castes) द्वारा, अल्पसंख्यक जातियों के हितों का हनन करके, समतामूलक समाज (Egalitarian Society) के निर्माण की प्रक्रिया बाधित

5. राजनीति में गुटबंदी (Factionalism in Politics) एवं राजनीतिक अस्थिरता (Political Instability) – फलतः लोकतंत्र कमजोर

जाति-राजनीति संबंध का लाभ / सकारात्मक पक्ष / पक्ष में तर्क

Advantages of Caste-Politics Relation

1. जातीय आधार पर राजनीतिक दलों के निर्माण द्वारा शक्ति संतुलन (Power Balance) स्थापित करके लोकतंत्र का विकास (Development of Democracy)

2. निरक्षर जातियों को राजनीतिक जागरूकता (Political Awareness) एवं राजनीतिक सामाजीकरण (Political Socialisation) द्वारा, इनके राजनीतिक सहभागिता (Political Participation) एवं मतदान व्यवहार (Voting Behaviour) को बढ़ाकर लोकतंत्र को मजबूती

3. राजनीतिक लाभ के लिए ही सही, निम्न जातियों का सशक्तिकरण करके, समतामूलक समाज (Egalitarian Society) के निर्माण में सहायक

4. जाति संघ एवं संगठनों के निर्माण (Formation of Caste Association and Caste Federation) द्वारा, दबाव समूह के रूप में, शक्ति का विकेन्द्रीकरण (Decentralization of Power) करके लोकतंत्र का विकास

5. निम्न एवं कमजोर जातियों के द्वारा, जातीय संगठनों के माध्यम से, अपने हितों की पूर्ति और सामाजिक न्याय (Social Justice) से युक्त भारतीय समाज का निर्माण

भारत में जाति-राजनीति संबंध : समीक्षा

Caste-Politics Relations in India: Review

1. निश्चित रूप से भारत में जाति-राजनीति संबंधों ने दोनों तरह के परिणामों को उत्पन्न किया है

परन्तु इसके नकारात्मक परिणाम (Negative Consequences) कई संदर्भों में लोकतंत्र एवं सामाजिक न्याय (Democracy and Social Justice) के लक्ष्य को दुष्प्रभावित कर रहे हैं

2. परन्तु... यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि जाति प्रधान भारतीय समाज में जाति-राजनीति संबंधों को पूर्णतः समाप्त करना कठिन है।

साथ ही... भारतीय संविधान में भी जातीय आधार पर राजनीतिक दलों के निर्माण को असंवैधानिक नहीं माना गया है, इसलिए.....

..... इसलिए भारत में जाति-राजनीति संबंधों को पूर्णतः समाप्त करना न तो तर्कसंगत है और न ही व्यवहार में सफल,

इसलिए आवश्यक है कि– जाति-राजनीति संबंधों के नकारात्मक पक्ष को समाप्त किया जाय तथा ऐसे संबंधों को स्वस्थ लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित करके, इसके लाभों को प्राप्त किया जाय

3. जाति को नकारात्मक संदर्भ में प्रयोग करने वाले दलों एवं व्यक्तियों को प्रतिबंधित करके, शिक्षा के प्रसार द्वारा लोगों की सोच को तार्किक बनाकर और अधिक से अधिक नागरिक समाज का विकास (Development of Civil Society) करके, जाति-राजनीति संबंधों के नकारात्मक प्रभावों से बचा जा सकता है

भारत में जाति-राजनीति : संभावित प्रश्न

1. भारतीय समाज में राजनीति में जाति की भूमिका का परीक्षण कीजिए?
2. समकालीन राजनीति में जाति की बढ़ती हुई भूमिका को रोकने हेतु उपाय बताइए।
3. जाति व्यवस्था लोकतंत्र में बाधक है या साधक? स्पष्ट कीजिए।
4. "समकालीन भारतीय राजनीति में बढ़ रहे जातिवाद ने विकास को उपेक्षित किया है और लोकतंत्र को कमजोर किया है" चर्चा कीजिए।
5. "जाति ने यदि राजनीति हेतु आधार प्रदान किया है तो राजनीति ने जाति को नवजीवन दिया है।" स्पष्ट कीजिए।